वित्तीय साक्षरता

युवा सर्वाइवर समूहों के इस्तेमाल के लिए

वित्तीय साक्षरता - युवा सर्वाइवर समूहों के इस्तेमाल के लिए

नतीजा

समूह के सदस्यों को वित्तीय साक्षरता और निजी पूंजी के प्रबंधन से जुड़ी मूल बातें पता चलेंगी। वो बैंकिंग सेवाओं के बारे में जानेंगे। सदस्य ये भी समझ पाएंगे कि एक कामयाब वित्तीय योजना क्या होती है। यह वित्तीय शिक्षा का मॉड्यूल यूथ सर्वाइवर टूलकिट के साथ प्रदान किया जा रहा है, जिसमें समूहों के साथ कार्य किस प्रकार से काम किया जाए - इसके बारे में सुझाव दिए गए हैं और युवा जो उत्तर भारत के बाल श्रम की तस्करी के सर्वाइवर हैं उनके साथ। मुख्या टूलकिट https://www.clfjaipur.org/resources/ पर हिंदी व अंग्रेजी में उपलब्ध है।

हर सत्र की अवधि - 30 - 45 मिनट

सत्रों की कुल संख्या - पांच

आवश्यक सामग्री

कागज़ की बड़ी सी शीट्स यानी पत्रक या श्वेत पट्ट यानी व्हाइट बोर्ड, पेपर, पेन और मार्कर्स

सहायक के लिए निर्देश

सिखाने में जल्दबाजी ना दिखाएं। आपको ये सुनिश्चित करना है कि हर एक जानकारी समूह के सदस्यों की समझ में आए।

आम तौर पर समूह के सदस्यों को बात समझाने का सबसे अच्छा ज़रिया होता है कि आप उन्हें आपके सवालों का जवाब देने के लिए बढ़ावा दें, विषय के अहम बिंदुओं पर उनके साथ चर्चा करें और भूमिका निभाने की गतिविधि यानी रोल प्ले का तरीका अपनाएं। जानकारी को बता भर देना शायद ही कभी काम आता है।

अगर समूह के लोगों को समझाने में वक्त लग रहा है तो कोई दिक्कत नहीं है। दिए गए समय में अगर आप सत्र को पूरा नहीं भी कर पाते हैं तो कोई बड़ी बात नहीं है। आप इसे अगली बार पूरा कर सकते हैं। सहायकों को चाहिए कि वो पिछले सत्र में दी गई जानकारी को संक्षेप में दोहराने के बाद ही अगला सत्र शुरू करें।

विषय-सामग्री	पृष्ठ- संख्या

सत्र 1: निजी वित्तीय संसाधन - एक परिचय 03

- पैसा संघर्ष का दूसरा नाम क्यों है? आर्थिक न्याय की ज़रूरत क्यों है?
- वित्तीय मामलों में इस्तेमाल होने वाले शब्दों और परिभाषाओं को समझना
- अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वित्तीय योजना को समझना
- ज़िंदगी के अलग-अलग मुकामों पर अलग-अलग लक्ष्य निर्धारित करना

सत्र 2: बैंक में खाता खोलने की बुनियादी जानकारी 09

- बैंकों का काम क्या है?
- बैंक में खाता खोलने के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है?
- बैंक खातों के कितने प्रकार होते हैं?
- पैसों के भुगतान के अलग-अलग तरीके
- अपने बैंक खाते से जुड़ी जानकारी हासिल करना
- सामान्य सेवा केंद्रों (सीएससी) और अन्य नगदी केंद्रों में आपकी पहचान एवं अन्य जानकारी के चोरी होने के जोखिम से बचाव के उपाय

सत्र 3: बजट बनाना 16

- बजट बनाना क्या होता है?
- बजट कैसे तैयार किया जाता है?
- पैसे बचाने के सुरक्षित तरीके कौन- कौन से हैं?

सत्र 4: सूक्ष्म उद्योग- आजीविका कमाने का वैकल्पिक तरीका 19

- सूक्ष्म उद्योग किसे कहते हैं?
- सूक्ष्म उद्योग शुरू करने के लिए पैसा कहां से जुटाया जा सकता है?
- छोटे कारोबार को कैसे चुनें?
- सूक्ष्म उद्योग के खर्च और आमदनी का प्रबंधन कैसे करें?

सत्र 5: अभ्यास एवं फीडबैक यानी प्रतिपुष्टि 21

सहायक ऐसे अभ्यास तैयार करेंगे जिनसे ये जांचा जा सके कि प्रतिभागियों ने इन सत्रों से कितना सीखा है। सहायक सत्रों को लेकर प्रतिभागियों के फीडबैक पर भी समूह के साथ चर्चा करेंगे।

सत्र 1 निजी वित्तीय संसाधन - एक परिचय

बहुत सारे परिवारों को पैसे की किल्लत का सामना क्यों करना पड़ता है?

चर्चा करें:

समूह के सदस्यों को इस सवाल का जवाब सोचने के लिए कहें। उनसे कुछ वजहें सुझाने के लिए प्रेरित करें। पहले समूह के सदस्यों के विचार जानकर उन पर चर्चा करें और उसके बाद सुनिश्चित करें कि चर्चा में नीचे दिए गए बिंदुओं को भी शामिल किया जाए:

- **कम वेतन:** दिहाड़ीदार कामगारों और अनौपचारिक क्षेत्र के कामगारों को अक्सर निर्वाह मज़दूरी यानी लिविंग वेज नहीं दी जाती। (समूह के सदस्यों को इसकी वजहों के बारे में सोचने के लिए कहें। जैसे कि: कामगार एकजुट होकर मालिक के साथ बेहतर तनख्वाह के लिए मोलभाव नहीं कर पाते- श्रम बाज़ार में कामगारों के पास वो ताकत ही नहीं है; कुछ मालिकों को अपने उत्पाद की ही कम कीमत मिलती है। ऐसे में उनके लिए कामगारों को अच्छा वेतन देना उतना आसान नहीं होता; कुछ सरकारी अधिकारी न्यूनतम वेतन से जुड़े कानूनों का पालन नहीं करवा पाते।)

- **महिला कामगारों के साथ भेदभाव:** बहुत सारे कंपनी मालिक या अन्य नियोक्ता महिलाओं को काम के बदले उचित और बराबर वेतन नहीं देते हैं। इसके अलावा कई परिवारों में महिलाओं को सिर्फ घर, उसके आसपास या पास के खेतों में ही काम करने की इजाज़त होती है। इसकी वजह से उनके पास बेहतर वेतन वाले काम के विकल्प ही नहीं होते।

- **जातिगत भेदभाव:** कुछ नियोक्ता लोगों के साथ उनकी जाति या समुदाय के आधार पर भेदभाव करते हैं।

- **कामगारों के पास बेहतर वेतन के लिए ज़रूरी कौशल और योग्यता नहीं होती:** बहुत से लोगों के पास अच्छी शिक्षा और कौशल सीखने के लिए बहुत सीमित मौके होते हैं। इसकी वजह से वो ऐसी काबिलियत ही हासिल नहीं कर पाते जो एक अच्छी आमदनी के लिए चाहिए।

- **बाल मज़दूरी:** कई बार नियोक्ता व्यस्कों को उचित वेतन देने के बजाए कम दिहाड़ी पर बच्चे और बच्चियों से काम करवाते हैं।

- **कर्ज़:** कई परिवारों को मजबूरी में भारी- भरकम ब्याज पर कर्ज़ लेना पड़ जाता है। इसकी वजह से उन्हें और भी ज़्यादा संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे हालात में उनकी कमाई भी कर्ज़ चुकाने में ही चली जाती है।

- **महंगी चीज़ों पर फिज़ूलखर्च:** कई परिवारों को ये लगता है कि उन्हें शादी, त्योहार और मातम जैसे आयोजनों पर पर भारी-भरकम खर्च करना चाहिए। कम आमदनी वाले परिवारों के लिए इसका मतलब कर्ज़ के दलदल में फंसना होता है। इसकी वजह से वो और भी ज़्यादा गरीबी में धंसते चले जाते हैं। कुछ समुदायों में लोग ऐसे हालात से बचने के लिए साथ आए हैं और ऐसे सामाजिक मौकों पर खर्च को व्यवहारिक सीमा में रखने के लिए आपसी सहमति बनाई है।

- **लत का शिकार होना:** जब लोग शराब या किसी दूसरे नशे के आदी हो जाते हैं तो इससे भी परिवार की आमदनी ज़ाया होने लगती है। लत में फंसे लोग खुद भी कमाई नहीं कर पाते।

इसलिए जब आप निजी वित्तीय संसाधनों और पैसे के प्रबंधन की बात करें, सदस्यों को ये ज़रूर याद दिलाएं कि बड़ा मसला दरअसल हमारे समाज में इंसाफ का, बराबरी भरे बर्ताव का है। कम आमदनी वाले लोगों के लिए अपने थोड़े से वेतन से बचत कर पाना मुश्किल होता है।

हमें ज़्यादा उचित तनख्वाह/कमाई के लिए उतना ही काम करने की ज़रूरत है जितना अपने पास मौजूद पैसे के सही इस्तेमाल करने के लिए।

जब आमदनी ही कम है तो हम अपने पैसे के इस्तेमाल की योजना क्यों बनाएं - क्या इसका कोई फायदा है?

<u>चर्चा करें:</u>

• अगर आप बचत और उचित छोटे कर्ज़ के बारे में जानकारी रखते हैं तो आपके लिए कौन सी बेहतर संभावनाएं खुलती हैं?

- क्या आपने अपने समुदाय में या और कहीं आसपास ऐसे लोगों को देखा या उनके बारे में सुना है जिन्होंने छोटी- छोटी रकम के सही निवेश से अपने आर्थिक हालात को मज़बूत किया हो?

• जो लोग अपनी आमदनी का सही इस्तेमाल नहीं जानते, उन्हें किन- किन मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है?

बुनियादी वित्तीय सिद्धांतों को समझना:

<u>विस्तार से बताएं:</u>

हमें सबसे पहले कुछ शब्दों के मायने समझने से शुरुआत करनी होगी।

• **पैसा:** हमारे आसपास बहुत सारी चीज़ों की अपनी कीमत होती है। जैसे अनाज, कपड़े वगैरह। लेकिन आप इनके बदले अपनी ज़रूरत के सामान नहीं ले सकते। पैसा इस काम का एक ज़रिया है। ये एक ऐसी संपत्ति है जिसे सुरक्षित तरीके से कहीं रखा जा सकता है और आसानी से इस्तेमाल किया जा सकता है।

• **मुद्रा यानी करेंसी:** पैसा सिक्कों और नोटों के मूर्त रूप में वजूद रखता है। ज़्यादातर देशों की अपनी अलग मुद्रा होती है, जिसे वहां का सेंट्रल बैंक जारी करता है। हमारे देश में भारत की सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक मुद्रा जारी करते हैं जिसे हम और आप भारतीय रुपये के तौर पर जानते हैं।

• **बैंक:** बैंक सरकार की मंज़ूरी से चलने वाला एक ऐसा वित्तीय संस्थान होता है जिसका काम पैसे को सुरक्षित जमा करके रखना और लोगों को अदा करना होता है। अपने पास जमा पैसे का इस्तेमाल बैंक लोगों और कारोबारियों को कर्ज़ देने के लिए करते हैं। इसके बदले में बैंक ब्याज़ वसूलते हैं।

• **ब्याज़:** कर्ज़ के बदले बैंक लोगों या कारोबारी प्रतिष्ठानों को मूल रकम से कुछ ज़्यादा पैसा चुकाने के लिए कहते हैं। इस अतिरिक्त पैसे को ब्याज़ कहते हैं। इसे किसी समयावधि में मूल पैसे के इस्तेमाल के लिए चुकाया जाता है।

• **खाता:** खाता पैसे को जमा करने का एक तरीका है। पैसे के मालिक यानी खाताधारक की ओर खाते की देख-रेख बैंक करते हैं। हर बैंक खाते की अपनी एक अलग संख्या होती है जो खाताधारक को दी जाती है।

• **बचत:** बचत वो पैसा है जो सभी खर्च पूरे होने के बाद व्यक्ति या प्रतिष्ठान के पास बचा रह जाता है। जिसका ये पैसा है, वो इसका इस्तेमाल विभिन्न तरीकों से कर सकता है।

• **निवेश:** निवेश ऐसी किसी परिसंपत्ति यानी ऐसेट को कहते हैं जिसमें व्यक्ति या प्रतिष्ठान या फिर सरकारें पैसा लगाती हैं ताकि समय के साथ वो पैसा और बढ़े। उदाहरण के लिए अगर कोई व्यक्ति ये सोच कर ज़मीन खरीदता है कि इससे और पैसा कमाएगा तो इसे निवेश कहेंगे। इस मामले में निवेशक को ये उम्मीद होगी कि समय के साथ ज़मीन यानी उसके निवेश की कीमत में बढ़ोत्तरी होगी।

अब ये जांचें कि क्या समूह का कोई सदस्य उपरोक्त शब्दों की अपनी समझ के हिसाब से व्याख्या करने के लिए अपने आप आगे आना चाहेगा/ चाहेगी? या आपने जो परिभाषाएं अभी समझाई हैं, उनका उदाहरण देना चाहेगा/ चाहेगी?

निजी वित्त से हम क्या समझते हैं?

जब भी हम “निजी वित्त” की बात कर रहे होते हैं तो हम दरअसल अपनी ज़िंदगी की हर उस चीज़ का ज़िक्र कर रहे होते हैं जिसका पैसे से कोई लेना- देना है।

निजी वित्त की योजना बनाने और उनके बारे में सोचने का मतलब है, हम ये तय कर रहे हैं कि पैसा कहां खर्च करेंगे, क्या हम बचत कर सकते हैं, क्या हमें कहीं से कोई वित्तीय सहायता मिल सकती है (जैसे कि शिक्षा के लिए मिलने वाला ऋण) और हम अपने बचाए गए पैसे का कहां और कैसे निवेश कर सकते हैं?

निजी वित्त की योजना बनाकर हम ज़िंदगी के कई अहम लक्ष्य पूरे कर सकते हैं।

यहां किस तरह के लक्ष्यों की बात कर रहे हैं हम?

जब समूह के सदस्य इस सवाल के जवाब में अपने सुझाव साझा कर लें, तो आप नीचे दिए गए उदाहरणों को साझा करें:

- कॉलेज की पढ़ाई या कोई पेशेवर प्रशिक्षण
- घर की मरम्मत करना या फिर अपनी रिहाइश को और बेहतर बनाना
- साइकिल, फोन, मोटरसाइकिल या लैपटॉप जैसी चीज़ें खरीदना
- छोटा-मोटा कारोबार शुरू करना
- बचत के पैसे को बैंक में रखना ताकि वो ज़रूरत के वक्त काम आए (उदाहरण के लिए अगर कभी घर का कोई सदस्य बीमारी या किसी और वजह से कमा पाने में सक्षम ना रहे)

अगर समूह के सदस्य सपनों की नदी यानी “रिवर ऑफ ड्रीम्स” वाले अभ्यास को पहले ही पूरा कर चुके हों तो उन्हें अपने बनाए चित्रों को ध्यान से देखने के लिए कहें। उनसे पूछें कि इन चित्रों में उन्होंने खुद को भविष्य में जहां पर दिखलाया है, उस मुकाम तक पहुंचने में निजी वित्तीय संसाधन उनकी कैसे मदद कर सकते हैं।

आप अपने लिए किस तरह की वित्तीय योजना बनाते हैं और उसका पालन कैसे करते हैं, ये आप पर निर्भर करता है। वित्तीय योजना बनाने में आपको अलग-अलग स्रोतों से अच्छी मदद मिल सकती है लेकिन फ़ैसला आपको ही करना है।

वित्तीय योजना के कुछ फायदे इस तरह हैं:

- आप खुद को पैसों के मामले में ज़्यादा सुरक्षित पाएंगे।
- आप पैसे का इस्तेमाल अपनी ज़िंदगी के ज़रूरी लक्ष्यों को हासिल करने के लिए कर सकते हैं।
- आपके ऐसे कर्ज़ों के फेर में फंसने का ख़तरा कम होगा जिन्हें आप चुका ना पाएं।
- आप भविष्य में अपने जीवनसाथी और बच्चों की ज़िंदगी को बेहतर बना पाएंगे।

अपनी आमदनी, बचत और खर्च को समझना:

अपने पैसे का प्रबंधन अपने हाथ में लेने का मतलब है कि आप सबसे पहले अपनी वर्तमान की स्थिति को समझें। इसकी शुरुआत करने के लिए निम्नलिखित बातें लिखकर रख लें:

- आप महीने में औसतन कितना कमाते हैं (अगर आप ऐसे व्यस्क हैं जिसने कमाना शुरू कर दिया है)?
- सामान्य स्थिति में आपका महीने का खर्चा कितना है (आप किन-किन चीज़ों पर पैसे खर्च करते हैं) ?
- आप हर महीने अपनी आमदनी में से कितने पैसे बचा लेते हैं?
- आप पर कितना कर्ज़ है (यानी वो पैसा जो आपको औरों को चुकाना है)?

अपने खर्चों का हिसाब रखने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप एक महीने तक अपनी आय और व्यय का पूरा लेखा - जोखा रखें। इस ब्योरे को आप किसी डायरी या नोटबुक में भी दर्ज कर सकते हैं। इससे आप समझ पाएंगे कि रोज़ाना आप किन चीज़ों के लिए पैसे का इस्तेमाल कर रहे हैं और इसका कुल जोड़ कितना बनता है।

ज़रूरतों और इच्छाओं के बीच के अंतर को समझना

अपने वित्तीय लक्ष्यों को तय करने की प्रक्रिया का एक और अहम पहलू है कि आप ज़रूरतों और इच्छाओं के बीच के फ़र्क को समझें।

ज़रूरत आप उसे कहेंगे जिसके बिना ज़िंदा रहना मुश्किल है। जैसे कि सबसे बुनियादी ज़रूरत है रोटी, कपड़ा और मकान। दूसरी तरफ़, इच्छा वो चीज़ है जो आप चाहते हैं कि आपके पास हो। उदाहरण के लिए अगर कोई इंसान ठंडे इलाके में रहता है तो एक गर्म कोट उसकी ज़रूरत है। लेकिन हो सकता है कि वो चमड़े की जैकेट खरीदना चाहता हो। यहां चमड़े की जैकेट उसकी इच्छा है लेकिन शरीर को गर्म रखने की ज़रूरत जैकेट के मुकाबले कहीं सस्ते कोट से भी पूरी की जा सकती है।

सही चुनाव करना

अगर आप नियमित बचत कर पाते हैं तो आपको कुछ चुनाव करने होंगे। उदाहरण के लिए, अगर कोई व्यक्ति महीने में 150 रुपये बचा लेता है तो 2 साल बाद उसके पास कितने पैसे होंगे? *(जवाब है 3,600 रुपये)*

अब इस पैसे का क्या करना है, व्यक्ति के पास इस बात के कई विकल्प हो सकते हैं। *(पहले समूह के सदस्यों से पूछकर उनके सुझाव जानें)*

- वो व्यक्ति चाहे तो इस पैसे को बैंक में ही जमा रहने दे ताकि भविष्य में ज़रूरत पड़ने पर काम आ सके।
- व्यक्ति ये कोशिश कर सकते हैं कि हर महीने 150 रुपये की जगह 200 रुपये बचा पाए।
- पूरे के पूरे 3,600 रुपये मोबाइल फोन खरीदने में खर्च कर दे।
- इस पैसे से कोई पुराना कर्ज़ चुका दे।
- तीज- त्योहार के मौके पर ये पैसा खर्च कर दे।
- अपने किसी दोस्त को उधार में दे दे।

आपकी राय में इनमें से किन-किन बातों का चुनाव सही रहेगा, और क्यों?

उम्र के हिसाब से लक्ष्यों का निर्धारण

जैसे - जैसे आपकी उम्र बढ़ती जाती है, वैसे- वैसे ही आपकी ज़रूरतें और वित्तीय संसाधन भी बदलते हैं। यानी इन बदलावों के हिसाब से आपकी वित्तीय योजना भी बदलेगी। याद रखें आपको सही वित्तीय योजना के लिए तीन तरह के लक्ष्यों में संतुलन बिठाना होगा:

अल्पावधि के लक्ष्य - ये वो वित्तीय लक्ष्य हैं, जिन्हें पूरा करने में एक साल या उससे भी कम वक्त लगता है। जैसे कि साइकिल या फिर फोन खरीदना।

मध्यम अवधि के लक्ष्य - इन वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने में दो से पांच साल तक का वक्त लग सकता है। उदाहरण के लिए कोई कर्ज़ चुकता करना।

दीर्घावधि के लक्ष्य - ये वो वित्तीय लक्ष्य हैं जिन्हें पूरा करने के लिए पांच साल या इससे ज़्यादा का वक्त चाहिए। जैसे कि आगे की पढ़ाई के लिए पैसे बचाना या फिर ज़मीन खरीदना।

उम्र के साथ वित्तीय लक्ष्यों के बदलने के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

जीवन का चरण	संभावित वित्तीय लक्ष्य
एक युवा व्यस्क जिस पर अभी सिर्फ अपना ज़िम्मा है। (16 साल - 25 साल तक की उम्र)	• बैंक खाता खोलना • अगर आमदनी है तो बचत शुरू करना • स्कूली शिक्षा पूरी करना और कॉलेज की पढ़ाई के लिए वित्तीय छात्रवृत्ति हासिल करना • व्यावसायिक प्रशिक्षण हासिल करना जिससे भविष्य में ज़्यादा आमदनी के रास्ते खुलें। • ये सुनिश्चित करना कि सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य बीमा हो • बाकी नौजवानों के साथ मिलकर ये जानना कि शिक्षा और सरकार की ओर से दिए गए दूसरे अधिकारों को कैसे हासिल किया जाए।
युवा शादीशुदा जोड़ा	• आमदनी को अपने घर में निवेश करना। • कर्ज़ के चक्कर से बचे रहने की कोशिश करना, बचत का प्रयास करना। • पैसे से जुड़े मसलों पर शांति के साथ आपस में चर्चा करना सीखना और बतौर दंपत्ति अपने जीवन के साझा लक्ष्यों को तय करना। • नए व्यावसायिक हुनर/योग्यताएं हासिल करने की कोशिश करते रहना जिससे कामकाज में तरक्की होती रहे। • ये सुनिश्चित करना कि आप सामाजिक सुरक्षा से जुड़े अपने सभी अधिकारों का इस्तेमाल कर रहे हैं। • आपसी रंज़ामंदी से ये तय करना कि आप कब माता-पिता बनना चाहते हैं। • उचित वेतन और नौकरी से जुड़े दूसरे अधिकारों को हासिल करने के लिए अन्य साथियों के साथ मिलकर काम करने की कोशिश करना।
छोटे बच्चों वाले दंपत्ति	• ये सुनिश्चित करना कि आपके पास स्वास्थ्य और जीवन का बीमा हो। • बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए बचत करने की कोशिश करना। • अपने बच्चों को खुशनुमा अनुभव देने की कोशिश करना (उदाहरण के लिए उन्हें चिड़ियाघर जैसी जगहों पर घुमाना, पढ़ाई के लिए स्कूल के अलावा ट्यूशन लगवाना वगैरह)। • अपनी रिटायरमेंट के लिए पैसे की बचत करना (उदाहरण के लिए भविष्य निधि खाते में पैसे जमा करवाना)। • अपने समुदाय की बेहतरी के लिए काम करना ताकि सभी को उचित वेतन मिले और समुदाय को स्थानीय स्तर पर एक बेहतर शासन प्राप्त हो। मुमकिन हो तो आप चुनाव लड़ने के बारे में भी सोच सकते हैं।

मध्यम आयु के व्यक्ति	• अपनी रिटायरमेंट के बाद की ज़िंदगी के लिए और ज़्यादा बचत करना। • बच्चों की कॉलेज की पढ़ाई का खर्च उठाना। • अपने समुदाय के लोगों की आर्थिक बेहतरी के लिए अन्य लोगों के साथ मिलकर काम करते रहना।
अधिक उम्र के व्यक्ति	• अपने नाती-पोतों की ज़रूरतें पूरी करने में मदद कर पना। • ये सुनिश्चित करना कि आपको बुज़ुर्गों के लिए सरकार की ओर से मिलने वाली सभी सुविधाएं और पेंशन मिल रही है। • वित्तीय मामलों पर अब तक जो आपने समझ हासिल की है, उससे दूसरों के साथ साझा करना।

सत्र 2 बैंक में खाता खोलने की बुनियादी जानकारी

इस सत्र का मकसद समूह के सदस्यों को बैंक खाते में पैसों की बचत का उद्देश्य और फायदा समझाना है। सत्र के दौरान सदस्यों को बैंक खातों के इस्तेमाल की भी जानकारी दी जाएगी।

सबसे पहले ये जांच लें कि क्या समूह के सभी सदस्यों के नाम पर बैंक में खाता है। अगर किसी सदस्य ने खाता नहीं खुलवाया है तो उन्हें हम बाद में खाता खुलवाने की प्रक्रिया समझाएंगे।

विस्तार से बताएं:

बैंकों का काम क्या होता है?

बैंक एक ऐसी संस्था है जहां लोग अपने पैसों को सुरक्षित जमा करके रखते हैं ताकि बचत कर सकें। सभी बैंक पक्के नियमों के आधार पर काम करते हैं। आपके पैसे को सुरक्षित रखने के साथ ही उनके कई और ऐसे काम होते हैं जो कारोबारों और व्यक्तियों के लिए बेहद अहम होते हैं।

कई बार लोगों को उतने पैसों की ज़रूरत पड़ती है जितने उनके पास जमा नहीं होते। उदारण के लिए अगर आपको घर या गाड़ी जैसी महंगी चीज़ खरीदनी हो या फिर अपना कोई कारोबार शुरू करना हो। ऐसे मौकों पर बैंक 'खाताधारकों' को कुछ शर्तों पर 'कर्ज़' देने पर राज़ी हो सकते हैं।

खाता खुलवाने की प्रक्रिया

बैंक खाता किसी एक व्यक्ति के नाम पर या कई व्यक्तियों के साथ मिलकर साझे तौर पर खोला जा सकता है। इसके लिए आपको निम्नलिखित दस्तावेज़ जमा करवाने होते हैं:

- पासपोर्ट आकार के फोटो
- पहचान पत्र (आधार कार्ड और पैन कार्ड)
- आपके पते का सबूत
- खाता खोलने के लिए शुरुआती रकम

खाता खुलने के बाद बैंक ग्राहक को एक **खाता संख्या** और **चेकबुक** देते हैं। अब कई बैंक खाताधारकों को ऑनलाइन या **मोबाइल बैंकिंग** की भी सुविधा मुहैया करवाते हैं। मोबाइल बैंकिंग यानी आप अपने खाते में जमा राशि देखने, किसी दूसरे खाते में पैसे पहुंचाने और अपने खाते से जुड़े कई काम अपने मोबाइल या कंप्यूटर से कर सकते हैं।

बैंक खाते कितने प्रकार के होते हैं?

- **बचत खाता**

ये खाते पैसों की बचत के लिए बैंक में खोले जाते हैं। इनकी ख़ासियत ये होती है कि आप अपनी मर्ज़ी की कोई भी रकम जमा करवा सकते हैं। इन खातों को चलाना काफी आसान और सुलभ होता है। छात्र- छात्राओं, वेतन पाने वाले लोगों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए बचत खाता अक्सर पहली पसंद होता है। बचत खातों में जमा पैसे पर छोटा-मोटा ब्याज़ भी मिलता है। यानी बैंक बचत खाते में जमा आपकी रकम में कुछ पैसा अपनी ओर से भी जोड़ते हैं।

- **चालू खाता**

ये खाता आम तौर पर कारोबारी खुलवाते हैं ताकि वो जितनी बार चाहें पैसे जमा करवा सकें और निकाल सकें। चालू खातों के बारे में ये जानना आवश्यक है कि उनमें जमा पैसे पर बैंक कोई ब्याज नहीं देते हैं। इन खातों के ज़रिए खाताधारक जमा रकम से ज़्यादा पैसे भी खर्च कर सकते हैं। इसे बैंकिंग की भाषा में "ओवरड्राफ्ट" कहा जाता है। लेकिन बचत की रकम से ज़्यादा इस्तेमाल हुए पैसे पर बैंकों को ब्याज देना होता है। दूसरे शब्दों में जब बैंक आपको खाते में जमा अपनी रकम से ज़्यादा पैसे इस्तेमाल करने की इजाज़त देते हैं तो बदले में ब्याज़ भी वसूलते हैं।

- **सावधि जमा खाता (फिक्स्ड डिपॉज़िट)**

ये खाता उन लोगों के लिए बेहतर विकल्प है जो पैसे को लंबे समय तक बैंक में रखना चाहते हैं। सावधि जमा खातों का सबसे बड़ा फायदा ये होता है कि आपको उनमें जमा पैसे पर बैंक बचत खाते के मुकाबले ज़्यादा ऊंची ब्याज दर देते हैं।

- **डिजिटल बैंकिंग**

एक बार खाता खुलने के बाद आप उससे जुड़े बहुत सारे काम अपने कंप्यूटर या मोबाइल फोन/ टैबलेट के ज़रिए भी कर सकते हैं। ये सुविधा बैंक वेबसाइट और अपनी मोबाइल ऐप के माध्यम से मुहैया करवाते हैं। इसी को हम डिजिटल बैंकिंग या ऑनलाइन बैंकिंग कहते हैं। इन सेवाओं में निम्नलिखित शामिल हैं:

- अपना अकाउंट बैलेंस जांचना (यानी ये पता लगाना कि आपके खाते में कितने पैसे हैं)
- अपने खाते से किसी दूसरे खाते में पैसे भेजना
- बैंक से चेकबुक मंगवाना
- खाते से जुड़े पासवर्ड बदलना (पासवर्ड वो गोपनीय कोड होता है जिसकी ज़रुरत आपको अपने खाते से जुड़े किसी भी ऑनलाइन काम के लिए पड़ती है। ये आपके खाते में जमा पैसे को सुरक्षित रखने के लिए बेहद अहम होता है।)

- **डिजिटल बैंकिंग - क्या करें और क्या ना करें**

अपने खाते से जुड़ी ऑनलाइन सेवाओं का इस्तेमाल करते वक्त सावधानी बरतना बेहद ज़रूरी है क्योंकि मौजूदा दौर में ऐसे ठगों की कमी नहीं जिनकी शातिर नज़र बैंक में जमा आपकी कमाई पर रहती है।

ऑनलाइन बैंकिंग के इस्तेमाल के लिए बैंक आपको एक "यूज़र आईडी" और पासवर्ड देते हैं। मोबाइल फोन, कंप्यूटर या टैबलेट पर अपने खाते तक पहुंचने के लिए आपको इन दोनों का इस्तेमाल करना होता है। किसी भी प्रकार की रकम का ऑनलाइन लेनदेन भी यूज़र आईडी और पासवर्ड के बिना मुमकिन नहीं होता है।

क्या करें	क्या ना करें
• अपनी यूज़र आईडी और पासवर्ड को गोपनीय रखें। किसी के साथ भी उन्हें साझा ना करें। • अपनी यूज़र आईडी और पासवर्ड को कहीं लिखकर रखने से बेहतर है आप उन्हें याद करके रख लें। • बैंक खाते से जुड़ी ऑनलाइन सेवाओं के इस्तेमाल के बाद हर बार खाते से पूरी तरह लॉग ऑफ (बाहर आना) ना भूलें और हर बार अपने कंप्यूटर के कैशै (कंप्यूटर पर आपकी गतिविधियों की जानकारी का लेखा-जोखा) को मिटा दें। • अपने खाते से जुड़ी हर गतिविधि की जानकारी रखने के लिए बैंक एसएमएस अलर्ट की सुविधा देते हैं। बैंक से उस सुविधा के लिए खुद को रजिस्टर करवाएं।	• कभी भी ईमेल पर दिए गए वेबसाइट लिंक पर क्लिक करके अपने खाते में लॉग इन ना करें। इसके लिए सीधे बैंक की वेबसाइट पर जाएं। • ईमेल/ एसएमएस या फोन कॉल पर किसी को भी अपनी निजी जानकारी ना दें। • कंप्यूटर पर मौजूद ब्राउज़र (जहां से आप कोई भी वेबसाइट खोलते हैं) आपको पासवर्ड याद रखने यानी 'रिमेम्बर पासवर्ड' का विकल्प देते हैं। बैंक खाते के लिए कभी भी इसका प्रयोग ना करें।

अपने बैंक खाते से जुड़ी जानकारी को किसी दूसरे व्यक्ति के कंप्यूटर या लैपटॉप में बचाकर ना रखें। अपने यूज़र आईडी और पासवर्ड को किसी के साथ साझा ना करें- तब भी नहीं अगर कोई आपसे ये कहे कि वो बैंक से संबध रखता है / रखती है।

(नगद पैसे के अलावा) किसी चीज़ को खरीदने पर दाम कैसे चुकाएं?

समूह के सदस्यों से पूछें कि उन्हें नगद भुगतान के अलावा चीज़ों की खरीदारी के कितने तरीकों के बारे में पता है। जब कोई सदस्य किसी तरीके के बारे में बताए तो उसे बोर्ड पर लिख लें और उसके बाद ये देखें कि क्या वो सदस्य इस तरीके से जुड़ी जानकारी को समूह के दूसरे सदस्यों के साथ साझा कर सकता है।

इसके बाद खरीदारी के भुगतान के निम्नलिखित तरीकों की जानकारी समूह के सदस्यों को दें:

1. चेक द्वारा अथवा चेक के माध्यम से

चेक कई दशकों से पैसे के लेनदेन का लोकप्रिय ज़रिया रहे हैं। हालांकि अब ज़्यादा से ज़्यादा लोग ऑनलाइन बैंकिंग के विकल्प का भी प्रयोग करने लगे हैं। मगर फिर भी चेक के ज़रिए भुगतान बैंकिंग उद्योग के लिए अब भी काफी अहमियत रखता है।

चेक के माध्यम से भुगतान करने के लिए आपको इन बातों का ख़्याल रखना ज़रूरी है:

- चेक की पर्ची पर पैसे अदा करने वाले व्यक्ति का नाम और दस्तख़त होने चाहिएं (उस व्यक्ति के नाम और हस्ताक्षर जिसके खाते से पैसे दिए जाने हैं।)
- उस व्यक्ति का नाम जिसे पैसे मिलने जा रहे हैं।
- वो तारीख़ जिस दिन चेक के ज़रिए पैसे का भुगतान होना है। चेक की पर्ची उस तारीख़ के बाद भी एक निश्चित अवधि तक वैध रहेगी।

अगर इनमें से कोई भी एक चीज़ चेक की पर्ची पर नहीं है तो बैंक चेक के ज़रिए भुगतान नहीं करेंगे।

चेक की पर्ची से पैसे का लेनदेन कैसे होता है, इसे एक उदाहरण की मदद से समझने की कोशिश करते हैं: मान लीजिए आपके पास बैंक में 2,500 रुपये हैं। बात को समझने के लिए बैंक के नाम को "क-बैंक" मान लेते हैं। अब आप अपने दोस्त को 1,000 रुपये चेक के ज़रिए देना चाहते हैं। मान लेते हैं आपके दोस्त का नाम अजय है। भुगतान के लिए-

1. आप अजय के नाम पर 1000 रुपये के चेक की पर्ची लिखेंगे। ये पर्ची आपको "क-बैंक" द्वारा दी जाने वाली चेकबुक से मिलेगी। ज़्यादातर बैंक खाता खुलवाते समय ग्राहक को चेकबुक देते हैं।
2. आप चेक की इस पर्ची को अपने दोस्त अजय को दे देते हैं। अजय इस चेक को ले जाकर अपने बैंक में जमा करवाएगा। मान लीजिए इस बैंक का नाम "ख-बैंक" है।
3. अब "ख-बैंक" इस चेक को आपके बैंक यानी "क-बैंक" के पास भेजेगा।
4. "क-बैंक" ये जांचेगा कि आपने जो चेक की पर्ची पर ब्योरा भरा है, वो सही है। इस बात की पुष्टि होने के बाद "क-बैंक", आपके दोस्त अजय के बैंक यानी "ख-बैंक" को 1,000 रुपये भेजेगा।
5. ये 1,000 रुपये अब "ख-बैंक" में आपके दोस्त अजय के खाते में जमा हो जाएंगे।
6. इसके साथ ही "क-बैंक" में आपके खाते से 1,000 रुपये कट जाएंगे।

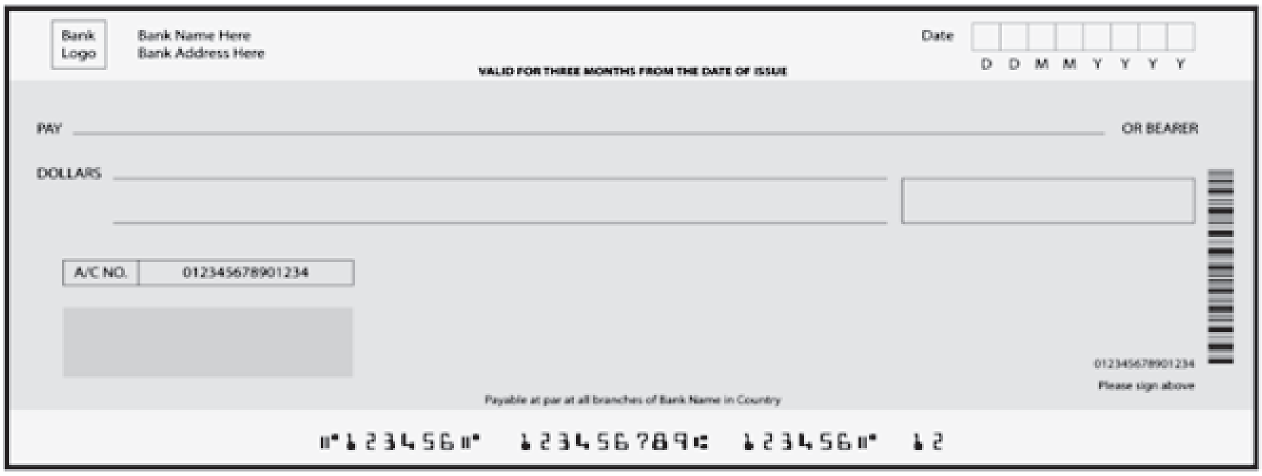

(तस्वीर- चेक की पर्ची का एक नमूना)

कार्ड्स के माध्यम से डिजिटल लेनदेन के तरीके

2. डेबिट कार्ड्स

डेबिट कार्ड्स के दो काम होते हैं। पहला तो उनकी मदद से खाताधारक बैंकिंग से जुड़े कई काम एटीएम मशीन में ही कर सकते हैं, जैसे - पैसे जमा करवाना, खाते से पैसे निकालना और खाते से जुड़ी विभिन्न जानकारियां हासिल करना। दूसरा, डेबिट कार्ड पैसे के भुगतान के लिए भी प्रयोग में लाए जाते हैं।

(तस्वीर - डेबिट कार्ड का एक नमूना)

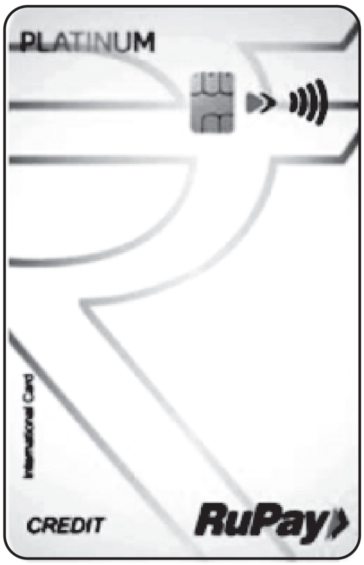

(तस्वीर-क्रेडिट क कार्ड का एक नमूना)

3. क्रेडिट कार्ड्स

क्रेडिट कार्ड्स ग्राहक को बैंक से फौरन कर्ज़ लेने की सुविधा देते हैं। इस कर्ज़ की मदद से वो पैसे का भुगतान कर सकते हैं। "क्रेडिट" यानी कर्ज़ का मतलब ही होता है, आपको पैसा दिया गया है, इस भरोसे के साथ कि आप बाद में इसे वापस कर देंगे। जब आप क्रेडिट कार्ड की मदद से भुगतान करते हैं तो पैसे सीधे आपके बैंक खाते से नहीं कटते हैं बल्कि बैंक आपको उतनी रकम कर्ज़ के तौर पर दे रहा होता है। कार्ड के धारक को ये रकम वापस चुकाने के लिए बैंक निश्चित अवधि देते हैं (आम तौर पर एक महीना)। अगर कार्डधारक इस अवधि में ये रकम बैंक को वापस नहीं कर पाता/ पाती तो बैंक बकाया रकम पर ऊंची दर से ब्याज़ वसूलते हैं। हालांकि क्रेडिट कार्ड्स का बिना सोचे- समझे इस्तेमाल आपकी माली हालत के लिए जोखिम भरा भी हो सकता है क्योंकि ये कार्ड्स ग्राहक को पैसे ना होने के बावजूद खरीदारी का विकल्प देते हैं।

4. प्रीपेड कार्ड्स

ये पहले से निश्चित रकम वाले कार्ड्स होते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो जिस व्यक्ति के पास प्रीपेड कार्ड होगा, वो इस कार्ड की रकम की सीमा तक कार्ड के ज़रिए भुगतान कर सकता है। उदाहरण के लिए अगर आपके 2000 रुपये की रकम वाला प्रीपेड कार्ड है और आपने उस कार्ड से 2000 रुपये की खरीदारी कर ली है तो वो कार्ड खाली है। अब उससे और भुगतान नहीं कर सकते जब तक कि आप उस कार्ड में और पैसे नहीं डलवा देते।

(तस्वीर - प्रीपेड कार्ड का एक नमूना)

बैंकिंग कार्ड्स के इस्तेमाल से जुड़े दिशा - निर्देश

डेबिट, क्रेडिट और प्रीपेड कार्ड पैसे के भुगतान का आसान तरीके हैं। लेकिन उनका इस्तेमाल करते वक्त निम्नलिखित बातों का ख़्याल रखना भी ज़रूरी है।

- डेबिट कार्ड की मदद से एटीएम मशीन में से पैसे निकालते वक्त सचेत रहें। आसपास ये देख लें कि कोई ऐसा शख़्स तो नहीं जो आपको मशीन में पिन नंबर डालते हुए देख रहा हो।
- क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल सिर्फ सहूलियत के लिए करना चाहिए। इसे बैंक से कर्ज़ लेने का आसान तरीका समझकर प्रयोग ना करें। कार्डधारक को ये सुनिश्चित करना चाहिए कि वो कार्ड पर बकाया रकम को वक्त पर चुकाए ताकि भारी- भरकम ब्याज़ से बचा जा सके।
- बैंकिंग से जुड़े सभी तरह के कार्ड्स को सुरक्षित जगह पर रखें। ये सुनिश्चित करें कि गलत हाथों में ना पड़कर उनका दुरुपयोग ना हो।
- अपने कार्ड से जुड़े पिन नंबरों को किसी के साथ साझा ना करें। तब भी नहीं जब कोई आपसे कहे कि वो आपके बैंक की तरफ से ये जानकारी मांग रहे हैं।

5. ई-कॉमर्स भुगतान

जब भी आप कोई सामान या सेवा ऑनलाइन खरीदते हैं और उसके लिए पैसे चेक या नगद के बजाए किसी इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से चुकाते हैं तो उसे ई-कॉमर्स भुगतान कहते हैं। आपने देखा होगा आजकल लोग अक्सर अपने स्मार्टफोन्स पर विभिन्न मोबाइल ऐप्स के माध्यम से खरीदारी करते हैं। ये ई-कॉमर्स का एक प्रचलित उदाहरण है। ई-कॉमर्स भुगतान के कई फायदे हैं, जैसे:

- सुरक्षा
- दक्षता यानी ज़्यादा निपुण तरीके से भुगतान
- सहूलियत
- इस्तेमाल में आसान

6. पैसे के भुगतान का एक और आसान तरीका- क्यूआर कोड

क्यूआर कोड का मतलब होता है क्विक रिस्पॉन्स कोड यानी ऐसे कोड जो आपके भुगतान के अनुरोध पर बहुत तेज़ी से प्रतिक्रिया करते हैं। इस तरीके का इस्तेमाल आप यूपीआई यानी यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (एकीकृत भुगतान अंतरापृष्ठ) ऐप्स की मदद से कर सकते हैं। आइये देखते हैं, क्यूआर कोड से पैसे का लेनदेन कैसे होता है:

- ग्राहक जहां से खरीदारी करते हैं, वहां अपने स्मार्टफोन से यूपीआई ऐप पर जाकर एक क्यूआर चिन्ह को स्कैन करते हैं।
- भुगतान से पहले ग्राहक जांच लेते हैं कि वो कितनी रकम का आंकड़ा लिख रहे हैं, किसे भुगतान कर रहे हैं, वगैरह। इसके बाद वो मोबाइल स्क्रीन पर एक बटन दबाकर भुगतान की पुष्टि करते हैं।
- भुगतान से पहले ग्राहकों को यूपीआई ऐप पर अपने द्वारा तय किए गए पिन नंबर को दर्ज करना होता है।
- सही पिन नंबर डालने के बाद भुगतान सेकेंडों में पूरा हो जाता है और आपके यूपीआई ऐप के अलावा एसएमएस पर भी भुगतान की पुष्टि का संदेश मिल जाता है।

एटीएम (ऑटोमेटेड टेलर मशीन यानी स्वचलित रोकड़िया यंत्र)

एटीएम वो मशीनें हैं जिनसे बैंक के खाताधारक बिना बैंक कर्मचारियों की मदद के ही पैसे निकालने और अपने खाते में जमा रकम की जानकारी लेने जैसे बैंकिंग से जुड़े कई काम कर सकते हैं।

बैंकों के ग्राहकों/ खाताधारकों के लिए एटीएम मशीनों के कई फायदे हैं। उदाहरण के लिए:

1. उन्हें छोटे-मोटे कामों के लिए बैंकों की शाखाओं के चक्कर नहीं काटने पड़ते।
2. बैंकिंग के कामों में ज़्यादा समय नहीं खर्च करना पड़ता क्योंकि ज़्यादातर जगहों पर एटीएम मशीनें आसपास ही मिल जाती हैं।
3. एटीएम मशीनों से चौबीसों घंटे सेवाएं ली जा सकती हैं।
4. पैसे निकालने के अलावा एटीएम मशीनें खाते में बाकी रकम की जानकारी, खाते में लेन-देन के संक्षिप्त ब्योरे यानी बैंक स्टेटमेंट को हासिल करने और अपने बैंकिंग से जुड़े कार्ड्स के पिन नंबर बदलने के भी काम आती हैं।
5. बैंकों के ग्राहक किसी दूसरे बैंक की एटीएम मशीन से भी पैसे निकालने, खाते में शेष राशि का पता लगाने और अपने पिन नंबर बदलने जैसे काम कर सकते हैं।

बैंक खातों के इस्तेमाल और पैसे के भुगतान के इन विभिन्न तरीकों को समझाने के बाद समूह के सदस्यों से इस जानकारी के अलग- अलग पहलुओं के बारे में बात करें। जैसे कि:

- सदस्यों की राय में पैसे के भुगतान का कौन सा तरीका सबसे आसान है?
- ऊपर बताए गए भुगतान के तरीकों में से कौन सा सबसे मुश्किल हो सकता है (उदाहरण के लिए अगर सदस्यों के पास स्मार्टफोन की सुविधा ना हो तो)?
- सदस्यों की राय में पैसे के लेनदेन के लिए बताए गए तरीकों में सबसे ज़्यादा जोखिम किसमें है? और क्यों?

सदस्यों के साथ चर्चा करें कि हर नागरिक को बैंकिंग व्यवस्था के इस्तेमाल का अधिकार है। बैंक के सभी कर्मचारियों का फ़र्ज़ है कि वो अपने सभी ग्राहकों के साथ सम्मान के साथ पेश आएं। सदस्यों के साथ निम्नलिखित सवालों पर भी चर्चा करें:

- अगर बैंक उनके साथ बराबरी भरा बर्ताव नहीं कर रहा है तो उन्हें क्या करना चाहिए?
- अगर बैंक के कर्मचारी किसी बात को या बैंकिंग की किसी प्रक्रिया को उन्हें समझाने के लिए तैयार नहीं हैं तो सदस्य क्या कर सकते हैं?

अपना अकाउंट बैलेंस चेक करना (यानी खाते में शेष बची राशि की जानकारी हासिल करना)

बैंक स्टेटमेंट अथवा ***अकाउंट स्टेटमेंट*** बैंकों द्वारा दिया जाने वाला वो दस्तावेज़ है जिसमें खाताधारक के बचत खाते या किसी अन्य प्रकार के खाते से जुड़ी हर गतिविधि की जानकारी दी जाती है। इस दस्तावेज़ में एक निश्चित अवधि तक ही खाते में जमा रकम में हुए बदलावों का विवरण होता है। बैंक स्टेटमेंट्स की मदद से खाताधारक अपने खाते में हुए लेनदेन की पूरी जानकारी रख सकते हैं।

अगर आप नियमित तौर पर अपने खाते से जुड़ी बैंक स्टेटमेंट्स पर ग़ौर करते हैं तो आप अपने जमा पैसे से जुड़े किसी भी संदिग्ध लेनदेन की पकड़ सकते हैं; उदाहरण के लिए तब जब किसी और व्यक्ति ने बिना आपकी इजाज़त आपके डेबिट कार्ड से पैसे खर्च किए हों। बैंक स्टेटमेंट्स से आप ये भी जान पाते हैं कि क्या आपको जो पैसे मिलने थे, वो सही रकम में खाते में जमा हुए हैं, फिर चाहे वो पेंशन हो, पीएम आवास योजना के तहत मिलने वाली किस्त हो, छात्र वज़ीफा या फिर सामाजिक कल्याण से जुड़ा कोई और ऐसा फायदा जिसके आप हकदार हों।

बैंक खाते की स्टेटमेंट आप अपने बैंक की किसी भी शाखा, स्थानीय सामान्य सेवा केंद्र (सीएससी) या कैश प्वाइंट यानी नगदी केंद्रों से ले सकते हैं। खाते से पैसे निकलवाते वक्त हर बार आपको मिनी अकाउंट स्टेटमेंट यानी खाते में लेनदेन का संक्षिप्त ब्योरा ले लेना चाहिए। इससे आपको पैसे निकालने से पहले और उसके बाद खाते में शेष राशि की जानकारी मिल जाएगी और आप सीएससी या कैश प्वाइंट पर किसी भी फर्ज़ीवाड़े का शिकार नहीं होंगे।

सामान्य सेवा केंद्रों एवं अन्य नगदी केंद्रों पर अपनी पहचान की चोरी के जोखिम से बचाव

पहचान की चोरी क्या है?

जब कोई आपकी निजी जानकारी का इस्तेमाल ठगी या किसी दूसरी तरह के फायदे के लिए करता है तो उसे पहचान की चोरी कहा जाता है। इस निजी जानकारी में आपका नाम, घर का पता, ई-मेल का पता, पासवर्ड और पिन नंबर्स, बायोमेट्रिक/उंगलियों के निशान, आधार नंबर, जन्म-तिथि, या/ और खाता संख्या शामिल हैं। आपकी इस जानकारी को जुटाने के बाद चोर आपके नाम पर बैंक से कर्ज़ ले सकते हैं या फिर आपके खाते में जमा रकम पर हाथ साफ कर सकते हैं। इसलिए:

- ऊपर बताई गई निजी जानकारी कभी किसी के साथ साझा ना करें। खाते से बायोमेट्रिक तकनीक के ज़रिए पैसे निकालते वक्त अतिरिक्त सावधानी बरतें। सामान्य सेवा केंद्र या किसी अन्य नगदी केंद्र में पैसे जमा करवाने या पैसे निकलवाने के बाद बैंक स्टेटमेंट लेना ना भूलें या फिर अपनी पासबुक को ज़रूर अपडेट करवा लें।

सत्र 3 बजट बनाना और बचत करने के तरीकों को सीखना

चर्चा करें

बजट बनाना यानी बजटिंग क्या है?

हम लोगों को अक्सर ये कहते सुनते हैं कि उनका खर्च उनके बजट से बाहर जा रहा है।
लेकिन ये बजट होता क्या है?
बजट दरअसल आपकी आमदनी, खर्च और बचत के विवरण को कहते हैं।

बजट बनाने की प्रक्रिया यानी बजटिंग आने वाली एक निश्चित अवधि के लिए आपकी आमदनी और खर्च की योजना बनाने को कहते हैं। अगर आपकी आमदनी में ऐसा हिस्सा बच जाता है जिसे आप खर्च नहीं करते तो उसे "सरप्लस" यानी "बढ़ती" कहते हैं। बजट में इसी रकम को बचत के तौर पर दिखाया जा सकता है।

बजट में बचत कितनी होती है, ये आपकी आमदनी और खर्च पर निर्भर करता है। इसलिए बजटिंग से आप ये पता लगा सकते हैं कि आपकी आमदनी का कितना हिस्सा हर महीने खर्च होगा और कितना हिस्सा आप प्रति माह बचा सकते हैं।

आपका बजट दरअसल आपकी आय पर निर्भर करता है क्योंकि आप उतना ही खर्च कर सकते हैं या बचा सकते हैं जितना आप कमाते हैं।

महीने की शुरुआत में या फिर हर हफ़्ते के आखिर में तनख्वाह पाने वाले कई कामगार अक्सर महसूस करते हैं कि उन्हें पता ही नहीं चलता उनका वेतन जाता कहां है। फिर ये लोग हैरान होते हैं कि "आखिर मैंने खर्च किया कहां?"

अपने निजी वित्तीय प्रबंधन पर हमारा नियंत्रण होना बहुत आवश्यक है। हम अपनी आमदनी और खर्च का हिसाब बेहतर तरीके से लगा सकते हैं अगर उसका लेखा-जोखा बजट के तौर पर लिख लें। इससे हम ज़्यादा अच्छे तरीके से समझ पाएंगे कि हमारा पैसा कहां से आ रहा है और उसे कहां खर्च किया जाना चाहिए।

हम चाहें तो नगदी के आवागमन का एक विवरण यानी कैश फ्लो स्टेटमेंट तैयार कर सकते हैं जिसमें पैसे के आगमन (कैश इनफ्लो) और पैसे के बहिर्गमन (कैश आउटफ्लो) को दर्शाया गया हो।

पैसे का आगमन यानी कैश इनफ्लो यानी - पैसा कहां से आ रहा है?
पैसे का बहिर्गमन यानी कैश आउटफ्लो यानी - पैसा कहां जा रहा है?

बजट तैयार करना:

आइये बजट तैयार करने की प्रक्रिया को एक उदाहरण की मदद से समझते हैं। हम एक ऐसे कामगार की मिसाल लेते हैं जो महीने के ज़्यादातर दिन निर्माण के काम में मज़दूरी करता है। इसके अलावा पड़ोसियों की साइकिल ठीक करके भी उसकी कुछ अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। मान लेते हैं कि ये शख़्स घर पर परिवार के साथ रहता है और रहन- सहन एवं खाने-पानी के खर्च में अपना हाथ बंटाता है:

महीना - जनवरी

पैसा कहां से आ रहा है?	पैसे का आगमन (कैश इनफ्लो)	पैसा कहां जा रहा है?	पैसे का बहिर्गमन (कैश आउटफ्लो)
निर्माण के काम से मिलने वाली मज़दूरी	4,800	परिवार की रिहाइश के किराये में योगदान	1,500
साइकिलों की मरम्मत करने से होने वाली आमदनी	500	मोबाइल फोन का रिचार्ज	350
		परिवार के खाने-पीने के खर्च में योगदान	2,000
		काम में चाय-पानी का खर्चा	550
		बस यात्रा में होने वाला खर्च	600
कुल जोड़	**5,300**		**5,000**

बचत = पैसे का कुल आगमन – पैसे का कुल बहिर्गमन
ये व्यक्ति हर महीने अपने बैंक खाते में कितने पैसे बचा सकता है?

पैसे की बचत के सुरक्षित उपाय क्या हैं?

ज़्यादातर मेहनतकश लोग पैसे कमाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और उसके बाद हर महीने बचत के लिए उन्हें कई जगह समझौता करना होता है। इसलिए ये बेहद अहम हो जाता है कि उनकी बचत का पैसा सुरक्षित रहे।

समूह के सदस्यों के साथ नीचे दिए गए विकल्पों पर चर्चा करें। उनसे पूछें कि क्या उनकी राय में ये विकल्प बचत का सुरक्षित तरीका हैं। (समूह के सदस्यों के सुझाव जान लेने के बाद उनके साथ अपने जवाब साझा करें):

विकल्प 1: अपनी बचत के पैसे को किसी सरकारी मान्यता- प्राप्त बड़े बैंक में या फिर डाकखाने में बचत खाता खुलवाकर जमा करवाएं।

जवाब: ये बचत का एक सुरक्षित तरीका है। बचत खाते मे पैसे जमा करवाने के बाद छपी हुई पर्ची लेना ना भूलें और ऐसी सभी रसीदों को संभाल कर रखें।

विकल्प 2: अपनी बचत के पैसे को अपने किसी दोस्त या रिश्तेदार को सहेजने के लिए दे दें।
जवाब: ज़रूरी नहीं कि आपका पैसा सुरक्षित रहे! ऐसा ना करना ही बेहतर है! कुछ गलत हुआ तो ना सिर्फ आपका पैसा डूबने का खतरा है बल्कि दोस्त या रिश्तेदार के साथ रिश्ते भी खराब हो सकते हैं। इसलिए ये कोई अच्छा समाधान नहीं कहलाएगा।

विकल्प 3: बचत के पैसे को किसी बक्से में सहेजकर उसे अपने पलंग के नीचे रख दें।
जवाब: ये भी कोई अच्छा विकल्प नहीं है। रकम अगर छोटी हो (जैसे कि एक दिन की कमाई) तो उसे फिर भी घर में रख सकते हैं। लेकिन इससे ज़्यादा पैसे को बैंक या डाकखाने में ही रखना चाहिए।

विकल्प 4: स्वयं- सहायता समूह यानी सेल्फ हेल्प ग्रुप (एसएचजी) के पास पैसे जमा करवाना

जवाब: अगर आप खुद ऐसे किसी स्वयं- सहायता समूह के सदस्य हैं तो ये बचत का एक सही विकल्प होगा। लेकिन ये ज़रूर देख लें कि समूह में जमा पैसे का लेखा- जोखा अच्छी तरह रखा जा रहा है और सदस्य जब चाहें तब एसएचजी में अपने खाते का विवरण यानी स्टेटमेंट हासिल कर सकते हैं ताकि वो निश्चिंत रहें कि उनका पैसा सही तरीके से जमा हो रहा है।

विकल्प 5: आपका कोई दोस्त आपको ऐसे किसी "वित्तीय जानकार" से मिलवाता है जो आपके पैसे को किसी ख़ास निवेश योजना में लगाकर फायदा पहुंचाने का दावा करता है ....

जवाब: इस तरह की वित्तीय योजनाएं ज़्यादातर फ़र्ज़ी ही होती हैं। इनका मकसद आपकी बचत के पैसे को हड़पना होता है। इस तरह की योजनाओं में आपको फांसने की कोशिश करने वालों के झांसे में ना आएं। ये सुनिश्चित करें कि आपके गांव के दूसरे लोगों को भी ये पता रहे कि इस तरह की योजनाएं अधिकतर आपका पैसा लूटने की एक तरकीब होती हैं। इन योजनाओं में आपको भारी- भरकम फायदे का वायदा करके ठगा जाता है। आप इस ठगी के चक्कर में ना आएं।

सत्र 4 सूक्ष्म उद्योग- आजीविका कमाने का वैकल्पिक तरीका

चर्चा करें

सूक्ष्म उद्योग क्या होते हैं?

आपकी राय में "सूक्ष्म उद्योगों" का क्या मतलब होता है? सूक्ष्म उद्योगों के कुछ उदाहरण क्या हो सकते हैं?
- *किसी व्यक्ति या परिवार द्वारा चलाया जाने वाला कोई छोटा कारोबार- जैसे कि किराने की दुकान, ढाबा, ऑटो-रिक्शा, कपड़े की दुकान, सिलाई की दुकान वगैरह इस श्रेणी के उद्योगों में गिने जा सकते हैं। या फिर ये कोई ऐसा कारोबार हो सकता है जिसमें थोड़े - बहुत लोग काम करते हों- उदाहरण के लिए कपड़े तैयार करने का छोटा-मोटा उद्योग या अथवा गाड़ियों की मरम्मत करने की वर्कशॉप।*

हमारे जैसे इलाकों में जहां कोई बड़े उद्योग नहीं हैं, खेती के अलावा सूक्ष्म उद्योग रोज़गार का अच्छा साधन साबित हो सकते हैं। इस तरह के उद्योगों को खड़ा करने में बहुत ज़्यादा पैसा लगाने की ज़रूरत नहीं होती लेकिन आपको एक अच्छी योजना अवश्य बनानी होगी।

एक सूक्ष्म उद्योग को खड़ा करने के लिए पर्याप्त पैसा कहां से जुटा सकते हैं?

गांव में किसी से मोटे ब्याज़ पर कर्ज़ लेना सुरक्षित नहीं है। छोटे स्तर पर कर्ज़ देने वाले कई प्रतिष्ठान होते हैं लेकिन वो भी अक्सर काफी ऊंची दर पर ब्याज़ वसूलते हैं। इसकी वजह से कर्ज़दार कई बार मुश्किल में आ जाते हैं।

इस काम के लिए कुछ ज़्यादा बेहतर विकल्प निम्नलिखित हो सकते हैं:
- अगर आपने कुछ अरसे तक बैंक में पैसे बचाकर रखे हों तो आपका बैंक आपको कर्ज़ दे सकता है। हालांकि इसके लिए बैंक को राज़ी करना मुश्किल काम हो सकता है।
- अगर आपका परिवार किसी स्वयं सहायता समूह का हिस्सा है तो आपको उस समूह से सरकार के आजीविका कार्यक्रम के तहत उचित ब्याज़ दर पर कर्ज़ मिल सकता है।
- अगर आपको कहीं से इकट्ठी रकम मिलने वाली है या फिर किसी तरह का मुआवज़ा, बाल/बंधुआ मज़दूरी के लिए मिलने वाला मुआवज़ा या न्यूनतम दिहाड़ी कानून के तहत बकाया वेतन मिलने वाला हो, तो आप उस पैसे का इस्तेमाल सूक्ष्म उद्योग शुरू करने में कर सकते हैं।

सही किस्म के सूक्ष्म उद्योग को चुनना बहुत ज़रूरी है।
किसी भी सूक्ष्म उद्योग में कामयाब होने के लिए आपको पहले किन सवालों पर गौर करना होगा और उनसे जुड़े सही फैसले लेने होंगे?
(पहले सदस्यों से ऐसे सवालों के उदाहरण पूछें)
कुछ सवाल जो किसी भी सूक्ष्म उद्योग को शुरू करने से पहले आप खुद से पूछना चाहेंगे:
1. मेरी दिलचस्पी किस काम में है? किस काम को करने में मुझे मज़ा आता है? कौन से काम को मैं सबसे अच्छी तरह करन जानता हूं/ जानती हूं?
2. क्या इन कामों में कोई ऐसा काम भी है जो सूक्ष्म उद्योग शुरू करने के लिए उपयुक्त हो?
3. अगर मैं ये सूक्ष्म कारोबार शुरू करूं तो क्या मेरे उत्पाद या सेवा को इस इलाके में पर्याप्त ग्राहक मिल पाएंगे (मिसाल के तौर पर क्या आपके इलाके में लोगों के पास इतने पैसे हैं कि वो आपके उत्पाद या सेवा को खरीद पाएं? कहीं तो नहीं कि आपके क्षेत्र में पहले से ही ऐसे कई अन्य उद्योग चल रहे हैं? जिस उत्पाद या सेवा को आप बेचना चाह रहे हैं, उसकी मांग साल भर रहती है या फिर सिर्फ कुछ मौसमों में?)
4. अपने सूक्ष्म उद्योग को कामयाब बनाने के लिए मुझे और क्या- क्या काम करने होंगे (उदाहरण के लिए क्या मेरे पास कोई योग्यता या हुनर का होना ज़रूरी है)?
5. क्या मैं इस काम को अकेले कर सकता/ सकती हूं या फिर मुझे और लोगों (परिवार के सदस्य या दोस्त) की मदद लेनी चाहिए?
6. इस सूक्ष्म कारोबार को शुरू करने के लिए मुझे किस-किस सामान की आवश्यकता होगी? इस सामान को खरीदने में कितना खर्च आएगा? इसे एक मिसाल की मदद से समझने की कोशिश करते हैं:

सूक्ष्म उद्योग का नाम: ताज़ा पकी हुई सब्ज़ियों और नूडल्स का ठेला

लागत का खर्च:

वस्तु का नाम	**कीमत**
खाना पकाने का सामान और देगची (सॉसपैन)/बर्तन	---
बिक्री का ठेला	
खाना पकाने के लिए गैस सिलिंडर	
कप और थालियां	
कारोबार शुरू करने की कुल लागत	

आपके सूक्ष्म उद्योग के खर्च और आमदनी का मासिक बजट:

खर्चों की सूची	**खर्च – पैसे का बहिर्गमन (कैश आउटफ्लो)**	**आमदनी**	**कैश इनफ्लो (पैसे का आगमन)**
सब्ज़ियां		सप्ताह 1 – बिक्री	
नूडल्स		सप्ताह 2 – बिक्री	
रसोई गैस		सप्ताह 3 – बिक्री	
मसाले		सप्ताह 4 – बिक्री	
खाना पकाने का तेल			
मासिक भुगतान, वो रकम जो आपको कारोबार शुरू करने के लिए कर्ज़ की किस्त के तौर पर चुकानी है			
आपने कारोबार के लिए जो अपना समय दिया है, उसका वेतन और आवाजाही का खर्च			
कुल खर्च		**कुल आमदनी**	

समूह के सदस्य चाहें तो विभिन्न सूक्ष्म उद्योगों के लिए बजट बनाने का अभ्यास कर सकते हैं: उदाहरण के लिए किराने की दुकान, मोबाइल फोन रिपेयर करने की दुकान, म्यूज़िक बैंड, ब्यूटी पार्लर, सब्ज़ियों की दुकान, मुर्गीपालन, फास्ट फूड की दुकान, जूस की दुकान वगैरह।

मुनाफे का हिसाब- किताब: किसी भी कारोबार के दो मकसद होते हैं- समाज के लिए उपयोगी उत्पाद या सेवा प्रदान करना और मुनाफा कमाना। “मुनाफा” कारोबार से **लागत** काटकर **बचने वाली रकम** को कहते हैं।

एक सूक्ष्म उद्योग में होने वाले मुनाफे से आप अपने खर्च पूरे कर सकते हैं और बाकी बचे हुए पैसे को अपने उद्योग को आगे बढ़ाने में लगा सकते हैं (जैसे कि ज़्यादा उपकरण खरीदने या आपूर्ति बढ़ाने के काम में)। अगर आपके कारोबार में हर महीने घाटा हो रहा है तो आप ज़्यादा लंबे वक्त तक उसे चलाए नहीं रख सकते।

अपने मुनाफे का हिसाब लगाने के लिए आप कारोबार पर होने वाली मासिक लागत को गिनें और फिर उसे कुल कमाई से घटा दें। जो रकम बाकी बचे, वही आपका मुनाफा है।
अगर ये रकम नेगेटिव यानी ऋणात्मक है (यानी खर्च अगर कुल आमदनी से ज्यादा आ रहा है) तो इसका मतलब है कि आपका कारोबार घाटे में चल रहा है।

सत्र 5 अभ्यास एवं फीडबैक यानी प्रतिपुष्टि

इस सत्र की शुरुआत समूह के सदस्यों के साथ कुछ अभ्यासों के साथ करें, जैसे कि:

आपके हिसाब से आप जो काम-धंधा करेंगे, उससे होने वाली आपकी आमदनी और खर्च का एक मासिक बजट तैयार करें। (ये बजट आपके मौजूदा काम से होने वाले आय और व्यय के आधार पर भी बनाया जा सकता है।)

एक ऐसे कारोबार की परिकल्पना करें जिसे आप आने वाले 2-3 सालों में शुरू करना चाहेंगे।
इसके बाद समूह के सदस्यों से ये जानने की कोशिश करें कि वित्तीय साक्षरता से जुड़े ये सत्र उनके लिए कितने काम के साबित हुए हैं। दो-दो सदस्यों की जोड़ी में निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा करें।

1. वो पांच बातें जो आपने इन सभी सत्रों से सीखी हैं।
2. कौन सी बात आपको सबसे ज़्यादा काम की लगीं?
3. कौन सी बात आपके काम की नहीं थी?
4. इन सत्रों के संचालन से जुड़ी कौन सी बातें आपको पसंद आईं और कौन सी बातें अच्छी नहीं लगीं?
5. भविष्य में ऐसे सत्रों के आयोजन को लेकर आपके क्या सुझाव हैं?

स्रोत:
एनसीईआरटी
इकनॉमिक टाइम्स
बिज़नेस वीक

बालश्रम मुक्त जयपुर

बचपन रहेगा बचपन

info@CLFJaipur.org

www.CLFJaipur.org